श्री कल्याणमंदिर

विधान एवं दीप अर्चना

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	श्री कल्याणमंदिर विधान एवं दीप अर्चना
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, ११०० प्रतियाँ
कवर-पृष्ठ	:	प्राची जैन शिवपुरी
प्रसंग	:	२२वाँ चातुर्मास २०२० शिवपुरी (म. प्र.)
लागत मूल्य	:	१५/-
प्रकाशक एवं प्राप्ति स्थान	:	श्री जैनोदय विद्या समूह संपर्क—९४२५१२८८१७
मुद्रक	:	विकास आफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक परिवार

श्रीमती विद्यादेवी के सोलहकारण व्रत एवं चारित्रशुद्धि (1234) व्रत के उद्यापन के उपलक्ष में
श्री अशोकचंद-श्रीमती विद्यादेवी जैन
श्रीमती संगीता-प्रहलाद जैन, संजीव-श्रीमती सरस्वती,
पवन-श्रीमती निशा, दिलीप-श्रीमती बबीता,
सुरेन्द्र-श्रीमती भारती, पलाश-श्रीमती मेघवर्षा,
साक्षी, अनमोल, सोनाली, अवनी, सम्यक जैन एवं

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस समय पूरा विश्व कोरोना जैसी महामारी से जूझ रहा था वहीं शिवपुरी में प्रवास के दौरान प्रभु भक्ति करते हुए आगम के आधार पर पूर्वकृत पूजन विधि को ध्यान में रखकर **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत **पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति **'श्री कल्याणमंदिर विधान एवं दीप अर्चना'** की रचना करके महान् उपकार किया है। प्रस्तुत कृति में मुनिश्री के द्वारा आचार्य कुमुदचन्द्र कृत कल्याणमंदिर स्तोत्र के माध्यम से श्रीपार्श्वनाथ भगवान की भक्ति करने का सुन्दर सोपान प्रदान किया है जो कि श्रावकों को भक्ति करने में पूर्ण सहयोगी बनेगी। श्रद्धा-भक्ति से ४४ अर्घ्य/दीपों के साथ या एक दीप से अनुष्ठान कर अपनी इष्ट सिद्धि की जा सकती है।

सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी सहयोगियों को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

– बा.ब्र. संजय, मुरैना

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहन्ताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोये सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, एसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा...
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥३॥ तेरा...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥
तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।

नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।
वे घर-घर हमें फिराएँ, पीछे से चाकू घौंपें॥

बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥
सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।

जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवो पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवो देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

चौबीसी का अर्घ्य

(लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फु हार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सिद्धभक्ति (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा, उवजुत्ता दंसणेय णाणेय।
सायार मणायारा, लक्खणमेयं तु सिद्धाणं॥
मूलोत्तर पयडीणं, बन्धोदयसत्त-कम्म उम्मुक्का।
मंगलभूदा सिद्धा, अट्ठगुणा तीद संसारा॥
अट्ठ वियकम्म वियला, सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ गुणा किदकिच्चा, लोयग्गणिवासिणो सिद्धा॥
सिद्धा णट्ठट्ठ मला, विसुद्ध बुद्धीय लद्धि सब्भावा।
तिहुअणसिर-सेहरया, पसियंतु भडायरा सव्वे॥
गमणागमण विमुक्के, विहडियकम्मपयडि संघारा।
सासह सुह संपत्ते, ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं॥
जय मंगल भूदाणं, विमलाणं णाणदंसणमयाणं।
तइलोइ-सेहराणं, णमो सदा सव्व सिद्धाणं॥
सम्मत्त-णाणदंसण-वीरिय सुहुमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु अव्वावाहं, अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं॥
तवसिद्धे णयसिद्धे, संजमसिद्धे चरित्रसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मि य, सिद्धे सिरसा णमस्सामि॥

इच्छामि भंते! सिद्धभत्तिकाउस्सग्गोकओ तस्सालोचेउं सम्मणाण सम्मदंसण सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविह कम्म-विप्पमुक्काणं अट्ठगुण-संपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पइट्ठियाणं तवसिद्धाणं णयसिद्धाणं संजमसिद्धाणं चरित्तसिद्धाणं अतीताणागदवट्टमाणकालत्तय सिद्धाणं सव्वसिद्धाणं णिच्चकालं अंचेमि पुज्जेमि वंदामि णमंसामि दुक्खक्खओ कम्मक्खओ बेहिलाओ सुगइगमणं समाहिमरणं जिणगुणसम्पत्ति होउ मज्झं।

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्यः।–४

(जोगीरासा)

तीर्थंकर उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग के स्वामी।
चौबीसी में सबसे न्यारे, जिनवर अंतर्यामी॥
विघ्न विनाशक धर्म प्रदायक पूजित केवलज्ञानी।
पार्श्वप्रभु को करके नमोऽस्तु, बारम्बार नमामि॥१॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः ...

पार्श्वनाथ की भक्ति अर्चना, जग में अतिशयकारी।
कुमुदचंद्र आचार्य प्रवर ने, लिखी भक्ति गुणकारी॥
प्रकट हुए तो पार्श्वनाथ जी, सब का हृदय छुआ रे।
कल्याणमंदिर स्तोत्र तभी से, जगत प्रसिद्ध हुआ रे॥२॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः ...

नमन वन्दना पाठ अर्चना, अनुष्ठान कर साँचे।
विघ्न कष्ट दुख दर्द नष्ट हो, भक्त खुशी से नाँचे॥
सब संसार सुखों को पाके, मोक्षमार्ग को पाएँ।
'विद्या' के 'सुव्रत' की इच्छा, दुख उपसर्ग नशाएँ॥३॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः ...

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
कण–कण मंगल क्षण–क्षण मंगल जन–जन मंगल होवे॥
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु कर, जग का मंगल होवे।
पार्श्व प्रभु को नमोऽस्तु करके, जग का मंगल होवे॥४॥

ओम् नमः सिद्धेभ्यः ...

(पुष्पांजलिं...)

===

कल्याणमंदिर विधान

स्थापना

(हरिगीतिका)

कल्याणमंदिर को नमन कर, पार्श्वप्रभु को पूज लें।
दुख संकटों को दूर करके, चेतना सुख खोज लें॥
इस भाव से हम द्रव्य लेकर, पूरते रंगोलियाँ।
यदि आप के चरणा पड़ें तो, हों दिवाली होलियाँ॥

(दोहा)

पार्श्वनाथ भगवान को, मन मंदिर में धार।
पूजन के पहले करें, नमोऽस्तु बारम्बार॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

कल्याणमंदिर का सरस जल, जन्म मृत्यु दुख हरे।
जिनभक्ति की महिमा दिखाकर, चेतना में सुख भरे॥
चैतन्य जल की प्राप्ति हेतु, भेंट जल हम कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्युविनाशनाय जलं...।

कल्याणमंदिर से मिलेगी, छाँव पारसनाथ की।
जिससे मिलेगी शान्ति निज की, फिक्र फिर किस बात की॥
संसार का संग्राम तजने, भेंट चंदन कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं...।

कल्याणमंदिर से रुकेगी, दुखद यात्रा मोह की।
विश्राम आतम को मिलेगा, प्राप्ति होगी मोक्ष की॥
अब कमठ जैसी भूल तजने, भेंट अक्षत कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय-अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान्...।

कल्याणमंदिर काव्य माला, गूँथना जो सीख ले।
खुद भेंट हों प्रभु चरण में तो, पुष्प आतम का खिले॥
इस काम का आतंक तजने, पुष्प अर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

कल्याणमंदिर के पदों की, चार पंक्ति जो पढ़ें।
वे चार अंगुल रूप रसना, पर विजय निश्चित करें॥
अध्यात्म का रस लें अतः, नैवेद्य अर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं...।

कल्याणमंदिर की करें जो, आरती दीपक जला।
दुख संकटों पर कर विजय वो, विश्व का करते भला॥
प्रभु पार्श्व जैसे पथ चुनें सो, दीप अर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं...।

कल्याणमंदिर की सुगंधी, हर दिशा महका रही।
जो भव भवों की कर्म कड़ियाँ, पार्श्व सम चटका रहीं॥
इस कर्म के हर खेल तजने, धूप अर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

कल्याणमंदिर से खुलेंगीं, सफलता की खिड़कियाँ।
विश्वास अपना कह रहा कि, प्राप्त होंगी मुक्तियाँ॥
फल पाप का हम त्याग लें सो, फल समर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

कल्याणमंदिर का हवन कर, होम जो भी कर रहे।
जप मंत्र माला के सहारे, पार्श्व प्रभु वो भज रहे॥
हम पार्श्व प्रभु सम पूज्य बनने, अर्घ्य अर्पित कर रहे।
कल्याणमंदिर को नमोऽस्तु, पार्श्वप्रभु को भज रहे॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

दूज कृष्ण वैशाख को, तजकर प्राणत स्वर्ग।
नमोऽस्तु पार्श्व प्रभु जो वसे, वामा माँ के गर्भ॥

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णद्वितीयायां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण ग्यारस तिथि, जन्मे पार्श्वकुमार।
विश्वसेन काशी करे, नाँच-नाँच त्यौहार॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पौष कृष्ण एकादशी, पार्श्व बने निर्ग्रन्थ।
तप कल्याणक हम भजें, हो नमोऽस्तु जयवंत॥

ॐ ह्रीं पौषकृष्ण-एकादश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

कृष्ण चतुर्थी चैत्र को, जीते सब उपसर्ग।
पार्श्व प्रभु को नमोऽस्तु कर, करें ज्ञान का पर्व॥

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णचतुर्थ्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं..।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, मोक्ष सप्तमी पर्व।
नमोऽस्तु पार्श्व निर्वाण को, भजें शिखरजी सर्व॥

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्लसप्तम्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

जयमाला

(दोहा)

कल्याणमंदिर के प्रभु, पार्श्वनाथ भगवान।
जिनको नमोऽस्तु कर करें, जयमाला गुणगाण॥

(ज्ञानोदय)

जब तक यह जीवन है तब तक, दुख संकट उपसर्ग रहें।
जो इन पर जय विजय करें वे, पार्श्वनाथ भगवान बनें॥
पर इनसे जो हुए पराजित, उनका कौन सहारा है।
सो कल्याण रूप मंदिर का, हमको मिला इशारा है॥१॥

जी हाँ ये कल्याण नाम का, वही पूज्य मंदिर स्तोत्र।
कुमुदचन्द्र आचार्य पूज्य ने, जिसे रचा भक्ति का स्त्रोत॥
जिसकी महिमा प्रभाव से तो, अतिशय हो ही जाते हैं।
जिससे देव देवियाँ मिलकर, चमत्कार दिखलाते हैं॥२॥

उज्जयनी के विक्रम राजा, कुशल प्रजा संचालक थे।
तब ही गंगा में स्नान को, आए तपसी साधक थे॥
योग्य शिष्य की तलाश करने, एक युवा को देख लिया।
धक्का दे फिर वाद विवाद कर, निर्णय सुन्दर एक लिया॥३॥

लेकिन तपसी हुए पराजित, कुमुदचन्द्र फिर नाम रखा।
जिनशासन अनुगामी क्षपणक, उनका यह उपनाम रखा॥
चित्तौढगढ़ पहुँचकर जिनने, पार्श्वनाथ के दर्शन कर।
कीर्तिस्तंभ के संकेतों से, एक गुफा खोली जाकर॥४॥

मात्र एक ही पृष्ठ पढ़ा कि, तुरत द्वार वह बंद हुआ।
अदृशवाणी हुई वहाँ पर, बस इतना ही पुण्य हुआ॥
एक बार इक योगी ने जब, कुमुदचन्द्र को ललकारा।
तेरा ज्ञानहीन है मुझसे, वरना कर अतिशय न्यारा॥५॥

राजा कपिल तभी यह बोला, इक पत्थर को करो नमन।
कुमुदचन्द्र तत्क्षण स्वीकारे, किए पार्श्व प्रभु का चिंतन॥
तब कल्याण महा मंदिर का, कर डाला स्तोत्र सृजन।
ज्यों ही 'आकर्णितोऽपि' वाले, किए छन्द का पाठ भजन॥६॥

तो चित्तौड़गढ़ वाले प्रभू, पार्श्वनाथजी प्रकट हुए।
ज्यों ही जय-जयकार हुई तो, हाथ जोड़ सब विनत हुए॥
कुमुदचन्द्र गुरु चमक उठे तब, योगी जी को क्षमा किया।
तब से अब तक अतिशय दिखते, जिनने सबको धर्म दिया॥ ७॥

अपनी केवल यही प्रार्थना, पार्श्वनाथ प्रभु भगवन से।
श्री कल्याण महा मंदिर से, जुड़े रहें जिनशासन से॥
सो होगी सुख शान्ति विश्व में, दुख उपसर्ग न आएंगे।
'सुव्रतसागर' पाठ भजन कर, मोक्ष महल झलकायेंगे॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसम्पन्न श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

अर्घ्यावली

१. अभय प्रदायक स्तुति

(वसंततिलका)

कल्याणमन्दिर मुदार मवद्य-भेदि
भीताभय प्रद-मनिन्दित मङ्घ्रि-पद्मम्।
संसार-सागर निमज्ज दशेष-जन्तु
पोतायमान मभिनम्य जिनेश्वरस्य॥

(मात्रिक सवैया/आल्हा)

जो कल्याणों के मंदिर हैं, पापों के भी नाशनहार।
भयभीतों को अभय दान दें, रहें अनिंदित बड़े उदार॥
भवसागर में गिरते जन को, जो जिनेन्द्र बन रहे जहाज।
जिनके चरण कमल को भजकर, सादर करूँ नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भव-समुद्रपतज्जन्तु-तारणाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्व-नाथाय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२. सिद्धिदायक स्तुति

यस्य स्वयं सुरगुरु र्गरिमाम्बुराशे:
स्तोत्रं सुविस्तृत-मतिर्न विभुर्विधातुम्।
तीर्थेश्वरस्य कमठ-स्मय धूमकेतो-
स्तस्याहमेष किल संस्तवनं करिष्ये॥

जो खुद गरिमा के सागर हैं, तीर्थंकर जो रहे महान।
धूम केतु सम कमठ-मान का, मिटा दिया था नाम निशान॥
विशाल मति वाला सुरगुरु भी, कर न सका जिनका गुणगान।
अल्प बुद्धि वाला होकर भी, करूँ उन्हीं का आज बखान॥

ॐ ह्रीं अनन्त गुणाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३. असमर्थ को समर्थ करने की शक्ति प्रदायक स्तुति

सामान्यतोऽपि तव वर्णयितुं स्वरूप-
मस्मादृशाः कथमधीश! भवन्त्यधीशाः।
धृष्टोऽपि कौशिक-शिशुर्यदि वा दिवान्धो
रूपं प्ररूपयति किं किल घर्मरश्मेः॥

नाथ! आपका स्वरूप कैसा, कितना सुन्दर बोले कौन।
मुझ सा वह सामान्य रूप से, कह न सके धर सके न मौन॥
ज्यों उल्लू का बच्चा दिन में, होकर भी अंधा भयभीत।
होकर जिद्दी क्या नहिं गाए, सुन्दर सूर्य रूप के गीत॥

ॐ ह्रीं चिद्रूपाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

४. अतिगहन आत्म गुणों की प्राप्तिदायक स्तुति

मोह-क्षया-दनुभवन्नपि नाथ! मर्त्यो
नूनं गुणान् गणयितुं न तव क्षमेत।
कल्पान्त-वान्त-पयसः प्रकटोऽपि यस्मान्-
मीयेत केन जलधेर्ननु रत्नराशिः॥

मोह नष्ट कर देव आपने, गुण भोगे जो अपरम्पार।
कौन माई का लाल जगत में, उनको गिनने करे विचार॥

प्रलयकाल में सागर का जल, जब हो जाता सीमा पार।
तो भी रत्न राशि को गिनने, कौन समर्थ यहाँ सरकार॥

ॐ ह्रीं गहन-गुणाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

५. उत्कृष्ट पद प्रदायक स्तुति

अभ्युद्यतोऽस्मि तव नाथ! जडाशयोऽपि
कर्तुं स्तवं लस-दसंख्य-गुणाकरस्य।
बालोऽपि किं न निज बाहु-युगं वितत्य
विस्तीर्णतां कथयति स्वधियाम्बुराशेः॥

जड़मति मैं भी देख आपके, असंख्य गुण का गुण-भण्डार।
रोक न पाया खुद को तो फिर, हुआ स्तवन को तैयार॥
जैसे बालक सागर का जब, देख बड़ा भारी विस्तार।
अपने हाथों को फैलाकर, कहे न क्या निज मति अनुसार॥

ॐ ह्रीं परमानन्त गुणाय क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

६. असाध्य कार्य साधक गुण स्तुति

ये योगिना-मपि न यान्ति गुणास्तवेश!
वक्तुं कथं भवति तेषु ममावकाशः।
जाता तदेव - मसमीक्षित-कारितेयं
जल्पन्ति वा निज-गिरा ननु पक्षिणोऽपि॥

ईश! आपके निज गुण गण का, कर न सके योगी गुणगान।
तो फिर उन्हीं गुणों को गाने, कैसे सक्षम मेरा ज्ञान॥
फिर भी उनको गाने का यह, बिना विचारे मेरा काम।
ज्यों निश्चय से निज वाणी से, पक्षी चहकें करें प्रणाम॥

ॐ ह्रीं अगम्य-गुणाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

७. अपवाद-अपमान निवारक स्तुति

आस्ता-मचिन्त्य-महिमा जिन! संस्तवस्ते
नामापि पाति भवतो भवतो जगन्ति।
तीव्रातपोपहत - पान्थ - जनान्निदाघे
प्रीणाति पद्म-सरसः सरसोऽनिलोऽपि॥

अचिन्त्य महिमा वाले जिन के, संस्तव की तो छोड़ो बात।
नाम मात्र संसारी जन को, सुखी करे दुख दूर भगात॥
ज्यों गर्मी में तेज धूप से, तपते जन दुख से हों खिन्न।
पद्म सरोवर मिले न पर वो, सरस हवा पा हुए प्रसन्न॥

ॐ ह्रीं स्तवनार्हाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

८. बिच्छु,सर्पादि विष नाशक स्तुति

हृद्वर्तिनि त्वयि विभो! शिथिली - भवन्ति
जन्तोः क्षणेन निबिडा अपि कर्म-बन्धाः।
सद्यो भुजंगममया इव मध्य-भाग-
मभ्यागते वन-शिखण्डिनि चन्दनस्य॥

जैसे चंदन वन में जब भी, आ जाने पर कोई मोर।
चंदन तरु से लिपट रहे जो, नाग पाश तत्क्षण कमजोर॥
वैसे ही जिनदेव आप भी, जिसके दिल को करो निहाल।
उसके कठोर कर्म बंध भी, हो जाते ढीले तत्काल॥

ॐ ह्रीं कर्मबन्ध-विनाशकाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

९. भूत-प्रेत बाधा निवारक स्तुति

मुच्यन्त एव मनुजाः सहसा जिनेन्द्र!
रौद्रैरुपद्रव-शतैस्त्वयि वीक्षितेऽपि।
गो-स्वामिनि स्फुरित-तेजसि दृष्टमात्रे
चौरैरिवाशु पशवः प्रपलायमानैः॥

ज्यों बलशाली गो-पालक को, तेजी से बस आता देख।
चोर छोड़कर सब पशुओं को, तुरत भागता प्राण समेट॥
एसे ही संसारी जन के, रौद्र उपद्रव शतक अनेक।
हो जाते हैं शीघ्र नष्ट वे, हे जिनेन्द्र! बस तुमको देख॥

ॐ ह्रीं दुष्ट-अपवर्ग-विनाशकाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

१०. महान् आपत्तियों से छुटकारा दिलाने वाली स्तुति

त्वं तारको जिन! कथं भविनां त एव
त्वामुद्वहन्ति हृदयेन यदुत्तरन्तः।
यद्वा दृतिस्तरति यज्जलमेष नून
मन्तर्गतस्य मरुतः स किलानुभावः॥

चर्म पात्र जो जल पर तैरे, और गया नदिया के पार।
उसमें भरी हवा ही उसको, ले जाती है परले पार॥
एसे कैसे आप जगत के, हो सकते प्रभु तारणहार।
आप हमारे दिल में हो सो, जब हम पार तभी तुम पार॥

ॐ ह्रीं सुध्येयाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

११. मिथ्या अन्धकार को दूर करने की सामर्थ्य

यस्मिन्हर प्रभृतयोऽपि हत-प्रभावाः
सोऽपि त्वया रति-पतिः क्षपितः क्षणेन।

विध्यापिता हुतभुजः पयसाथ येन
पीतं न किं तदपि दुर्धर-वाडवेन॥
जिस जल ने ही महाअग्नि को, बुझा दिया करके अभिमान।
उसे भयंकर बड़वानल क्या, नहीं सुखाती करके मान॥
इसी तरह जिस कामदेव ने, सब पर-देवों को दी मात।
हे प्रभु! तुमने क्षण भर में बस, मार भगाया वह रतिनाथ॥

ॐ ह्रीं अनंगमथनाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

१२. महा आश्चर्यकारी स्तुति

स्वामिन्न-नल्प गरिमाण-मपि प्रपन्ना-
स्त्वां जन्तवः कथमहो हृदये दधानाः।
जन्मोदधिं लघु तरन्त्यति लाघवेन
चिन्त्यो न हन्त महतां यदि वा प्रभावः॥
गरिमा गौरव वाले स्वामी, तुम्हें हृदय में जो लें धार।
और शरण में आकर वे जन, तुरत गये भवसागर पार॥
कैसे जल्दी वे तिर जाते, करता यह आश्चर्य जहान।
इसमें केवल प्रभु पुरुषों की, अचिन्त्य होती कृपा महान॥

ॐ ह्रीं अतिशय-गुरुवे क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

१३. क्रोध विनाशक स्तुति

क्रोधस्त्वया यदि विभो! प्रथमं निरस्तो
ध्वस्तास्तदा वद कथं किल कर्म-चौराः।
प्लोषत्यमुत्र यदि वा शिशिरापि लोके
नील द्रुमाणि विपिनानि न किं हिमानी॥

नाथ! आपने जब पहले ही, किया क्रोध का सत्यानाश।
कर्म चोर फिर ध्वस्त कर दिए, कैसे? कहो करें विश्वास॥
जैसे बर्फ हुई शीतल जब, जग में गिरकर बनी तुषार।
तो उससे फिर हरे-भरे वन, जलें नहीं क्या करो विचार॥

ॐ ह्रीं जितक्रोधाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

१४. कामविकार नाशक स्तुति

त्वां योगिनो जिन! सदा परमात्मरूप-
मन्वेषयन्ति हृदयाम्बुज कोष-देशे।
पूतस्य निर्मल रुचेर्यदि वा किमन्य-
दक्षस्य सम्भव-पदं ननु कर्णिकायाः॥

जैसे निर्मल पावन उज्ज्वल, कमल-बीज का जन्म स्थान।
कमल फूल की छोड़ कर्णिका, अन्य कहीं क्या मिले मुकाम॥
एसे ही प्रभु योगी अपने, हृदय कमल के बीचोंबीच।
नित परमातम पारस प्रभु के, दर्शन पा तजते भव कीच॥

ॐ ह्रीं महन्मृग्याय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

१५. विशुद्धि वर्धक जिन स्तुति

ध्यानाज्जिनेश! भवतो भविनः क्षणेन
देहं विहाय परमात्म-दशां व्रजन्ति।
तीव्रानलादुपल भाव-मपास्य लोके
चामीकरत्व-मचिरादिव धातु-भेदाः॥

जिस विध जग में धातु भेद सब, पाकर तीव्र आग संस्कार।
पत्थर पना छोड़कर जल्दी, बने शुद्ध सोने का हार॥

एसे ही संसारी प्राणी, हे प्रभु! तेरा करके ध्यान।
देह त्याग क्षण में बन जाते, पारस परमातम भगवान॥

ॐ ह्रीं कर्मकिट्ट दहनाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्रीपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

१६. खोई हुई वस्तु प्रदायक स्तुति

अन्तः सदैव जिन! यस्य विभाव्यसे त्वं
भव्यैः कथं तदपि नाशयसे शरीरम्।
येतत्स्वरूप मथ-मध्य-विवर्तिनो हि
यद्विग्रहं प्रशमयन्ति महानुभावाः॥

जिन भव्यों के अन्तर मन से, ध्याये जाते निःसंदेह।
उन जीवों के कैसे तुम तो, हे प्रभु! नष्ट करो दुख देह॥
सच में ऐसा स्वरूप है जो, मध्यवर्ति है पुरुष महान।
सभी विवादों की जड़ हर ले, निश्चित बनता वह भगवान॥

ॐ ह्रीं देह-देहि-कलह निवारकाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

१७. विषविकारनाशक स्तुति

आत्मा मनीषिभिरयं त्वदभेद - बुद्ध्या
ध्यातो जिनेन्द्र! भवतीह भवत्प्रभावः।
पानीयमप्यमृत - मित्यनु - चिन्त्यमानं
किं नाम नो विष-विकार-मपाकरोति॥

ज्यों जल को अमृत समान कर, जो कोई वह पिए जरूर।
तो फिर उसकी विष की बाधा, तुरत नहीं होती क्या दूर॥
अपनी आतम पारस जैसी, ज्ञानी यदि करता यों ध्यान।
तो वह कृपा आपकी पाकर, बने नहीं क्या आप समान॥

ॐ ह्रीं संसार विष-सुधोपमाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

१८. मिथ्या अभिप्राय नाशक स्तुति

त्वामेव वीत-तमसं परवादिनोऽपि
नूनं विभो! हरि-हरादि-धिया प्रपन्नाः।
किं काच-कामलिभिरीश सितोऽपि शंखो
नो गृह्यते विविध-वर्ण-विपर्ययेण॥

जिसे पीलिया रोग हुआ वह, रंग करे उल्टे स्वीकार।
श्वेत शंख भी पीला-पीला, क्या? नहिं देखे वह बीमार॥
इसी तरह पर मत अनुयाई, तुम्हें कहें अपने भगवान।
जबकि आप तो पारस प्रभु हो, सच्चे वीतराग विज्ञान॥

ॐ ह्रीं सर्व जन वन्द्याय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

१९. अशोकवृक्ष प्रातिहार्य - वैभव वर्द्धक स्तुति

धर्मोपदेश समये सविधानुभावा-
दास्तां जनो भवति ते तरुरप्यशोकः।
अभ्युद्गते दिनपतौ समहीरुहोऽपि
किं वा विबोध-मुपयाति न जीव-लोकः॥

ज्यों ही दिनपति के उगने पर, फल-फूलों की छोड़ो बात।
दुनियाँ भी क्या पुलकित ना हो, पाकर मंगलमयी प्रभात॥
त्यों ही दिव्य देशना के क्षण, निकट आप के जब हो लोक।
तो भक्तों की बात छोड़िये, सच में बनते वृक्ष अशोक॥

ॐ ह्रीं अशोकवृक्ष-प्रातिहार्ययुक्त क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२०. पुष्पवृष्टि प्रातिहार्य - स्त्री संबंधी समस्त रोग नाशक स्तुति

चित्रं विभो! कथमवाङ्मुख-वृन्तमेव
विष्वक्पतत्य-विरला सुर-पुष्प-वृष्टिः।
त्वद्गोचरे सुमनसां यदि वा मुनीश!
गच्छन्ति नूनमध येव हि बन्धनानि॥

पुष्प वृष्टि सुर सघन करें तो, चमत्कार हों भाव विभोर।
नीचे डण्ठल ऊपर कलियाँ, यों क्यों पुष्प गिरे चहुँ ओर॥
इसका मतलब सुमन पुरुष जो, हे प्रभु! तुझसे रहे न दूर।
उसके बन्धन गिर ही जाते, फूलों सा वह खिले जरूर॥

ॐ ह्रीं सुर-पुष्पवृष्टि-प्रातिहार्ययुक्त क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२१. दिव्यध्वनि प्रातिहार्य - मूक-बधिर-अन्ध नाशक स्तुति

स्थाने गभीर हृदयोदधि सम्भवायाः
पीयूषतां तव गिरः समुदीरयन्ति।
पीत्वा यतः परम-सम्मद-संग-भाजो
भव्या व्रजन्ति तरसाप्यजरामरत्वम्॥

प्रभु के जो गम्भीर हृदय के, महा सिन्धु से हो उत्पन्न।
वाणी वह जिनवाणी गंगा, अमृत जैसी करे प्रसन्न॥
जिसका कर जल-पान भव्य जन, चिदानंद में कर विश्राम।
अजर अमर बनते सिद्धातम, जिनको बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं दिव्यध्वनि-प्रातिहार्ययुक्त क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२२. चामर प्रातिहार्य - शत्रु को अनुकूल करने वाली स्तुति

स्वामिन्! सुदूर-मवनम्य समुत्पतन्तो
मन्ये वदन्ति शुचयः सुर-चामरौघाः।

येऽस्मै नतिं विदधते मुनि-पुंगवाय
ते नून-मूर्ध्व-गतयः खलु शुद्ध-भावाः॥

नाथ! आपके अगल-बगल में, नीचे से ऊपर की ओर।
देवों ने जो चँवर ढुराये, वो क्या शिक्षा दें चितचोर॥
मैं मानूँ जो शुद्ध-भाव से, मुनि पुंगव को करे प्रणाम।
बाल न बाँका उसका होगा, सबसे ऊँचा जग में नाम॥

ॐ ह्रीं सुर-चामर-प्रातिहार्ययुक्त क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२३. सिंहासन प्रातिहार्य - राजादि पद प्रदायक स्तुति

श्यामं गभीर-गिरमुज्ज्वल-हेम-रत्न-
सिंहासनस्थ-मिह भव्य-शिखण्डिनस्त्वाम्।
आलोकयन्ति रभसेन नदन्तमुच्चैः
चामीकराद्रि-शिरसीव नवाम्बुवाहम्॥

बहुत सुनहरा रत्न जड़ित जो, सिंहासन उज्ज्वल विख्यात।
जिस पर हैं गम्भीर वचन-मय, श्याम सलोने पारसनाथ॥
यों लगते सुरगिरी शिखर पर, श्याम मेघ गरजे ज्यों दूर।
लगा टकटकी ताक रहे हों, पारसप्रभु को भव्य मयूर॥

ॐ ह्रीं सिंहासन-प्रातिहार्ययुक्त क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२४. भामण्डल प्रातिहार्य - कान्ति नीरोग शरीर प्रदायक स्तुति

उद्गच्छता तव शिति-द्युति-मण्डलेन
लुप्त-च्छद-च्छविरशोक - तरुर्बभूव।
सान्निध्यतोऽपि यदि वा तव वीतराग!
नीरागतां व्रजति को न सचेतनोऽपि॥

उज्ज्वल चम-चम भामण्डल जब, चमके प्रभु में हो तल्लीन।
जिसके आगे अशोक तरु भी, शरमा जाए हो छवि हीन॥
तब फिर ऐसा कौन सचेतन, जिसने तेरा पाया साथ।
क्या वह वीतरागी न होगा, होगा! होगा! होगा! नाथ॥

ॐ ह्रीं भामण्डल-प्रातिहार्ययुक्त क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२५. देवदुन्दुभि प्रातिहार्य - नेतृत्व शक्ति प्रदायक स्तुति

भोः भोः प्रमाद-मवधूय भजध्वमेन-
मागत्य निर्वृति-पुरीं प्रति सार्थवाहम्।
येतन्निवेदयति देव! जगत्त्रयाय
मन्ये नदन्नभिनभः सुर-दुन्दुभिस्ते॥

नाथ! आपकी सुर दुंदुभि से, गूँजे धरा गगन सब ओर।
कहे त्रिजग से अरे! अरे! सब, प्रमाद को छोड़ो झकझोर॥
मोक्षपुरी को जाने वाले, मिले सारथी पारसनाथ।
इन्हें पूज अपना हित कर लो, आश्रय पाकर टेको माथ॥

ॐ ह्रीं देव-दुन्दुभि-प्रातिहार्ययुक्त क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२६. छत्रत्रय प्रातिहार्य - कालसर्प योग भय निवारक स्तुति

उद्योतितेषु भवता भुवनेषु नाथ!
तारान्वितो विधुरयं विहताधिकारः।
मुक्ता कलाप-कलितोल्ल सितातपत्र-
व्याजात्त्रिधा धृत-तनुर्ध्रुव-मभ्युपेतः॥

प्रभु तुमने जब दिव्य ज्ञान से, किया प्रकाशित सब संसार।
तभी सितारों से घिर करके, पहन मोतियों का शृंगार॥

अपने पथ से भ्रष्ट चन्द्रमा, बना तीन छत्रों सी देह।
सेवा में वह हाथ जोड़कर, तत्पर हाजिर निःसंदेह॥

ॐ ह्रीं छत्रत्रय-प्रातिहार्ययुक्त क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२७. कान्ति-प्रताप यश प्रदायक स्तुति

स्वेन प्रपूरित - जगत्त्रय - पिण्डितेन
कान्ति-प्रताप-यशसा मिव संचयेन।
माणिक्य - हेम - रजत - प्रविनिर्मितेन
सालत्रयेण भगवन्नभितो विभासि॥

तीन-तीन ऊँचे परकोटे, नाथ! आपके चारों ओर।
सोने चाँदी माणिक से जो, हुए सुशोभित हैं चितचोर॥
यों लगते ज्यों पारसप्रभु की, यशकीर्ति से हों भरपूर।
तीनों लोक समाएँ जिसमें, भक्तों को सुख दिए जरूर॥

ॐ ह्रीं शालत्रयाधिपतये क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२८. असमय निधन निवारक स्तुति

दिव्य-स्त्रजो जिन! नमत्त्रिदशाधिपाना-
मुत्सृज्य रत्न-रचितानपि मौलि-बन्धान्।
पादौ श्रयन्ति भवतो यदि वाऽपरत्र
त्वत्संगमे सुमनसो न रमन्त येव॥

हे प्रभु! तुम्हें झुके इन्द्रों के, रत्नजड़ित मुकुटों का माथ।
दिव्य पुष्प की मालाएँ तज, चाहें तव चरणों का साथ॥
सच ही है यह सुमन सु-मन जो, आ पहुँचा हो तेरे गाँव।
कहीं नहीं वह रम सकता फिर, पाकर पारसप्रभु की छाँव॥

ॐ ह्रीं भक्त-जनानवन-पतिराय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

२९. संकटमोचन स्तुति

त्वं नाथ! जन्म-जलधेर्विपराङ्मुखोऽपि
यत्तारयस्यसुमतो निज-पृष्ठ-लग्नान्।
युक्तं हि पार्थिव-निपस्य सतस्तवैव
चित्रं विभो! यदसि कर्म -विपाक-शून्यः॥

पार्श्वनाथ प्रभु भवसागर से, पूर्ण विमुख होकर भी आप।
अपने अनुयायी जीवों को, तारो हरकर उनके पाप॥
उचित किन्तु आश्चर्य यही कि, कर्म शून्य होकर भी ईश।
उल्टे पके घड़े सम तारो, भक्तों को देकर आशीष॥

ॐ ह्रीं निजपृष्ट-लग्नभय-तारकाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्व-नाथाय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३०. सर्व कार्य विकासक स्तुति

विश्वेश्वरोऽपि जन-पालक दुर्गतस्त्वं
किं वाक्षर-प्रकृतिरप्यलिपिस्त्वमीश।
अज्ञान-वत्यपि सदैव कथंचिदेव
ज्ञानं त्वयि स्फुरति विश्व-विकास हेतुः॥

जनपालक! जगपति होकर भी, दुर्गत हो तुम निर्धन रूप।
अक्षर स्वभाव के होकर भी, कौन करे लिपिबद्ध स्वरूप॥
अज्ञानी जन के संरक्षक, हे! पारसप्रभु हो अविराम।
विश्व प्रकाशी केवलज्ञानी, तुमको बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं विस्मयनीय-मूर्तये क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३१. दुष्टजन संयोग निवारक स्तुति

प्राग्भार - सम्भृत - नभांसि-रजांसि रोषा
दुत्थापितानि कमठेन शठेन यानि।
छायापि तैस्तव न नाथ! हता हताशो
ग्रस्तस्त्वमीभिरयमेव परं दुरात्मा॥

दुष्ट कमठ ने वैर क्रोध से, कर उपसर्ग महा संत्रास।
एसी धूल उड़ाई तुम पर, जो ढकती पूरा आकाश॥
लेकिन उससे नाथ! आपकी, छाया भी ना हुई मलीन।
किन्तु कमठ तो उसी धूल से, ग्रस्त हुआ मैला अतिदीन॥

ॐ ह्रीं कमठोत्थापित-धूलि-उपद्रव-जिताय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३२. पीड़ा पहुँचाने वाले दुर्जनों से रक्षा करने वाली स्तुति

यद्गर्जदूर्जित - घनौघमदभ्र - भीम
भ्रश्यत्तडिन्मुसल - मांसल - घोर - धारम्।
दैत्येन मुक्तमथ दुस्तर-वारि दध्रे,
तेनैव तस्य जिन! दुस्तर-वारि कृत्यम्॥

तत्पश्चात कमठ ने प्रभु पर, बिजली खूब गिराई तेज।
मूसलधार नीर बरसाकर, बहुत-बहुत गरजाए मेघ॥
किन्तु भयंकर अथाह वह जल, बना कमठ को तीर कमान।
उससे प्रभु का कुछ ना बिगड़ा, जय-जय-जय पारस भगवान॥

ॐ ह्रीं कमठ-कृत-जलधारा-उपसर्ग निवारकाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३३. अग्नि भूकम्पादि भय निवारक स्तुति

ध्वस्तोर्ध्व - केश - विकृताकृति - मर्त्य-मुण्ड
प्रालम्ब - भृद्भयदवक्त्रविनिर्यदग्निः।
प्रेतव्रजः प्रति भवन्तमपीरितो यः
सोऽस्याभवत्प्रतिभवं भव-दुःख-हेतुः॥

फिर उसने बिखरे बालों के, भूत भिजाए बहु विकराल।
नर मुण्डों की माला वाले, मुख से उगलें ज्वाला लाल॥
एसे प्रेतवर्ग से प्रभु जी, हुए न चंचल रहे अडोल।
बने कमठ को वे दुख दायक, एसे प्रभु की जय-जय बोल॥

ॐ ह्रीं कमठ-कृत-पैशाचिक-उपद्रव जितशीलाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३४. असाध्य रोग विनाशक स्तुति

धन्यास्त येव भुवनाधिप! ये त्रिसन्ध्य-
माराधयन्ति विधिवद्विधुतान्य—कृत्याः।
भक्त्योल्लसत्पुलक पक्ष्मल-देह-देशाः
पाद-द्वयं तव विभो! भुवि जन्मभाजः॥

नाथ! आपकी विनय भक्ति से, जिनका पुलकित हुआ शरीर।
खुशी-खुशी वे अन्य कार्य तज, विधिवत अर्पें श्रद्धा नीर॥
हे! त्रयजग के नाथ आपके, चरण कमल जो भजें त्रिकाल।
धन्य-धन्य हैं वे इस भू पर, वही भक्त हों मालामाल॥

ॐ ह्रीं धार्मिकवन्दिताय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३५. सर्व विपत्ति निवारक स्तुति

अस्मिन्नपार-भव-वारिनिधौ मुनीश!
मन्ये न मे श्रवण गोचरतां गतोऽसि।
आकर्णिते तु तव गोत्र-पवित्र-मंत्रे
किं वा विपद्विषधरी सविधं समेति॥

हे मुनीश! मैं यूँ मानूँ कि, भवसागर जो रहा अपार।
इसमें मैंने वचन आपके, सुने नहीं ना किया विचार॥
अगर आपका नाम मंत्र जो, पावन सुनकर बनता दास।
तो आपत्ती रूप नागनी, क्या आ सकती मेरे पास॥

ॐ ह्रीं पवित्रनाम-ध्येयाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३६. विजेता बनाने वाली स्तुति

जन्मान्तरेपि तव पाद युगं न देव!
मन्ये मया महितमीहित-दान-दक्षम्।
तेनेह जन्मनि मुनीश! पराभवानां
जातो निकेतनमहं मथिताशयानाम्॥

यही मानता मैं स्वामी कि, पर जन्मों में मैंने देव।
तेरे चरण कमल ना पूजे, इच्छित फल जो दें स्वयमेव॥
इसीलिए तो इस भव में भी, मनोरथों का जो हर्त्तार।
पराजयों का धाम बना हूँ, कैसे हो मेरा उद्धार॥

ॐ ह्रीं पूतपादाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३७. अनर्थ निवारक स्तुति

नूनं न मोह तिमिरावृत-लोचनेन
पूर्वं विभो! सकृदपि प्रविलोकितोऽसि।

मर्माविधो विधुरयन्ति हि मामनर्थाः
प्रोद्यत्प्रबन्ध गतयः कथमन्यथैते॥

मोह अंध से ढके हुए हैं, मेरे दोनों नयन विशाल।
जिससे मैंने एक बार भी, तुझे न देखा ओ! जिनलाल॥
यदि दर्शन तेरे करता तो, कर्मशत्रु अतिशय बलवान।
मुझे नहीं दुख दे सकते फिर, मैं खुद बनता आप समान॥

ॐ ह्रीं दर्शनीयाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३८. भगवान् बनाने वाली स्तुति

आकर्णितोऽपि महितोऽपि निरीक्षितोऽपि
नूनं न चेतसि मया विधृतोऽसि भक्त्या।
जातोऽस्मि तेन जन-बान्धव! दुःखपात्रं
यस्मात्क्रियाः प्रतिफलन्ति न भाव-शून्याः॥

यद्यपि मैंने दिव्य मंत्र भी, सुने आपके बहुतों बार।
दर्शन किए रचाई पूजन, खूब लगाई जय-जयकार॥
किन्तु भक्ति से धरा न मन में, अतः बना मैं दुख का धाम।
क्योंकि क्रियाएँ भाव शून्य जो, होती हैं निष्फल निष्काम॥

ॐ ह्रीं भक्तिहीन-जनबान्धवाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

३९. दुःखीजनों के रक्षक श्री जिन

त्वं नाथ! दुःखि-जन-वत्सल! हे शरण्य!
कारुण्य-पुण्य-वसते! वशिनां वरेण्य।
भक्त्या नते मयि महेश! दयां विधाय
दुःखाङ्कुरोद्दलन-तत्परतां विधेहि॥

हे! जनपालक दुखी जनों पर, आप बहाते प्रेम फुहार।
दीन हीन पर हे! योगीश्वर, तुम बरसाते करुणाधार॥
झुके भक्ति से विनम्र मुझ पर, दया करो हे! दयानिधान।
दुख अंकुर जल्दी नशवा दो, हे! महेश पारस भगवान॥

ॐ ह्रीं भक्तजन-वत्सलाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

४०. सौभाग्य वर्धक स्तुति

निःसंख्य सार शरणं शरणं शरण्य-
मासाद्य सादित-रिपु-प्रथितावदानम्
त्वत्पाद-पंकजमपि प्रणिधान-वन्ध्यो
वन्ध्योऽस्मि चेद्भुवन-पावन हा हतोऽस्मि॥

मित्र-बन्धु के अभाव में तो, आश्रय के प्रभु हो दातार।
पूज्य भुवन पावन पारस प्रभु, हे! शरणागत पालनहार॥
कर्म विनाशी धर्म प्रकाशी, चरण प्राप्त कर उनका ध्यान।
यदि न किया तो मरा अभागा, कैसे हो अपना कल्याण॥

ॐ ह्रीं सौभाग्यदायक-पदकमलयुगाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

४१. सर्वग्रह निवारक स्तुति

देवेन्द्र-वन्द्य! विदिताखिल-वस्तुसार!
संसार-तारक! विभो! भुवनाधिनाथ!।
त्रायस्व देव! करुणा-हृद्! मां पुनीहि
सीदन्तमद्य भयद-व्यसनाम्बुराशेः॥

हे! इन्द्रों के वन्दनीय विभु, विश्वतत्त्व के जाननहार।
हे! भवसागर तारक प्रभु जी, करुणा सरवर की जलधार॥

हे! त्रय जग के नाथ मुझे भी, महा दुखी भव जल से आज।
शीघ्र बचाओ शुद्ध बनाओ, सुखी करो पारस जिनराज॥

ॐ ह्रीं सर्वपदार्थवेदिने क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

४२. अचिन्त्य फल प्रदायक स्तुति

यद्यस्ति नाथ! भवदङ्घ्रि-सरोरुहाणां
भक्तेः फलं किमपि संतत-संचितायाः।
तन्मे त्वदेक-शरणस्य शरण्य! भूयाः
स्वामी त्वमेव भुवनेऽत्र भवान्तरेऽपि॥

मेरी एक हि शरण आप हो, शरणभूत हे! पारसनाथ।
तभी आपके चरण कमल की, भक्ति रचाई टेका माथ॥
यदि कुछ भी उससे संचित हो, तो चाहूँ बस इतना दाम।
इस भव में भी परभव में भी, दिल में हो बस पारसनाम॥

ॐ ह्रीं पुण्य-बहुजन-सेव्याय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

४३. अमंगल-अनिष्ट निवारक स्तुति

इत्थं समाहित-धियो विधिवज्जिनेन्द्र!
सान्द्रोल्लसत्पुलक - कंचुकितांग - भागाः।
त्वद्बिम्ब - निर्मल - मुखाम्बुज - बद्धलक्ष्या
ये संस्तवं तव विभो! रचयन्ति भव्याः॥

हे! जिनवर प्रभु भव्य जीव जो, सावधान धर बुद्धि विवेक।
निर्मल प्रभु मुख कमल निहारे, अपलक सादर घुटने टेक॥
बहुत-बहुत पुलकित तन मन से, करके प्रभु पारस से राग।
विधिवत् भक्ति गीत रचते वो, जगा रहे अपना सौभाग्य॥

ॐ ह्रीं जन्म-मृत्यु-निवारकाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

४४. क्रमशः मोक्षफल प्रदायक स्तुति

जन-नयन 'कुमुदचन्द्र' प्रभास्वराः स्वर्ग सम्पदो भुक्त्वा।
ते विगलित-मल-निचया अचिरान्मोक्षं प्रपद्यन्ते॥

नेत्र कमल उन भक्त जनों के, चंदा जैसे करें प्रकाश।
उज्ज्वल उज्ज्वल स्वर्गलोक का, वैभव भोगें भोग विलास॥
शीघ्र अन्त में कर्म नशाकर, मोक्ष-महल में करें निवास।
तो दुख संकट उनको हों क्या, जो हैं पारस प्रभु के खास॥

ॐ ह्रीं कुमुदचन्द्र-यतिसेवित-पादाय क्लीं महाबीजाजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि। (यहाँ दीप-प्रज्ज्वलन करें)

जाप्य मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय नमः।

समुच्चय जयमाला

(दोहा)

कल्याणमंदिर स्तोत्र से, पार्श्वनाथ के नाम।
श्रेष्ठ धर्म जिन भक्ति को, नमोऽस्तु करें प्रणाम॥

(चौपाई)

कुमुदचन्द्र आचार्य प्रवर की, श्री कल्याण महा मंदिर की।
आओ! महिमा गीत सुनाएँ, पार्श्वनाथ प्रभु के गुण गाएँ॥१॥
ये एसे स्तोत्र पाठ हैं, जिनके जग में ठाठ-बाठ हैं।
जो भी इनके आश्रित होते, जीवन में वो कभी न रोते॥२॥
इच्छित कार्य उन्हीं के पूरे, जग में रहते नहीं अधूरे।
उनको रोग शोक दुख पीड़ा, कभी न हो सकती भवक्रीड़ा॥३॥
असमय उनका निधन न होगा, दीन हीन जीवन न होगा।

विष बाधा भय नहीं किसी का, वैर विरोध न रहे किसी का॥४॥
इसके अनुयाई यश पाते, सुख सम्मान महापद पाते।
और कहें क्या उनकी गाथा, होता स्वयं स्वयं से नाता॥५॥
रत्नत्रय के बनते स्वामी, ज्ञानी ध्यानी शुद्ध विरामी।
जग पूजित अरिहन्त बनेंगे, मुक्तिवधू के कन्त बनेंगे॥६॥
हम तो सादर करें नमोऽस्तु, सदा धर्म की करें जयोऽस्तु।
तेरा मंगल मेरा मंगल, हे प्रभु करना सबका मंगल॥७॥
यही भावना नाथ! हमारी, हम भी पाएँ छाँव तुम्हारी।
'सुव्रतसागर' पर हो करुणा, मिलती रहे गुरु प्रभु शरणा॥८॥

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षरसहित श्री पार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

पार्श्वनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भवदुःखों को मेंट दो, पार्श्वनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

महिमा—कल्याणमंदिर स्तोत्र

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री पार्श्वनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
श्री पार्श्वनाथ जिनराजा जी, अतिशयकारी महाराजा जी।
हैं संकटमोचक विघ्नविनाशक स्वामी, जय-जय हो अंतर्यामी॥
श्री पार्श्वनाथ का पाठ...।

प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता है, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता है।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥
श्री पार्श्वनाथ का पाठ...।
आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥
श्री पार्श्वनाथ का पाठ...।
बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥
श्री पार्श्वनाथ का पाठ...।

===

श्री कल्याणमंदिर—आरती

(छूम छूम छन ना...ना...)

छूम छूम छन ना ना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
कल्याणमंदिर अतिशयकारी, पार्श्वनाथ की महिमा न्यारी-२
हम सब के जिनराजा, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
अश्वसेन के राज दुलारे, वामा की आँखों के तारे-२
जन्म बनारस धारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
कर्म रोग उपसर्ग विजेता, मोक्षमार्ग भक्तों के नेता-२
मुक्तिवधू के स्वामी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
दुख संकट भय भूत मिटाओ, ऋद्धि-सिद्धि सुखशान्ति दिलाओ-२
'सुव्रत' को भी तारो, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

आरती—श्री पार्श्वनाथ स्वामी

(लय : टन टना टन...)

झालर घंटी देख आरती, हम तो नाचें रे।
हम क्या नाचें बाबा सारी दुनियाँ नाचे रे।
झूम-झूम-झूम, झूम-झूम सारी दुनियाँ नाचे रे॥
भक्तों को भगवान् मिले हैं, प्यारे पारसनाथ।
जिनकी भक्ति करने सबका, झुक जाता है माथ।
ढोल मंजीरा ताली बाजे[२], घुँघरू बाजे रे॥
हम क्या नाचें .....॥ १॥

तुमने सारी दुनियाँ त्यागी, त्यागे कौन तुम्हें।
तभी शरण में हम आए हैं, देखो नाथ हमें।
सूरज चाँद सुरासुर तेरे[२], यश को बाँचें रे॥
हम क्या नाचें .....॥ २॥

अश्वसेन वामा के नंदन, बालयति परमेश।
दुख संकट उपसर्गविजेता, धरे दिगम्बर भेष।
आतम परमातम के रसिया[२], तुम ही साँचे रे॥
हम क्या नाचें .....॥ ३॥

मुँह माँगा वरदान मिला है, जिन श्रद्धालु को।
तुमसे तुमको माँग रहे हम, दान दयालु दो।
'सुव्रत' की झोली भर दो बिन[२], परखे जाँचे रे॥
हम क्या नाचें .....॥ ४॥

===